مع

اللّٰهُ لَهُمْ عَذَابًا شَدِيْدًا ۙ فَاتَّقُوا اللّٰهَ يٰۤاُولِي الْاَلْبَابِ ۚۛ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا ۛ

उन के लिये सख़्त अ़ज़ाब तय्यार कर रखा है तो **अल्लाह** से डरो ऐ अ़क़्ल वालो वोह जो ईमान लाए हो

قَدْ اَنْزَلَ اللّٰهُ اِلَيْكُمْ ذِكْرًا ﴿١٠﴾ رَّسُوْلًا يَّتْلُوْا عَلَيْكُمْ اٰيٰتِ اللّٰهِ

बेशक **अल्लाह** ने तुम्हारे लिये इ़ज़्ज़त उतारी है वोह रसूल[31] कि तुम पर **अल्लाह** की रोशन आयतें

مُبَيِّنٰتٍ لِّيُخْرِجَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا وَعَمِلُوا الصّٰلِحٰتِ مِنَ الظُّلُمٰتِ اِلَى

पढ़ता है ताकि उन्हें जो ईमान लाए और अच्छे काम किये[32] अंधेरियों से[33] उजाले की त़रफ़

النُّوْرِ ؕ وَمَنْ يُّؤْمِنْۢ بِاللّٰهِ وَيَعْمَلْ صَالِحًا يُّدْخِلْهُ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ

ले जाए और जो **अल्लाह** पर ईमान लाए और अच्छा काम करे वोह उसे बाग़ों में ले जाएगा

تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ خٰلِدِيْنَ فِيْهَاۤ اَبَدًا ؕ قَدْ اَحْسَنَ اللّٰهُ لَهٗ رِزْقًا ﴿١١﴾ اَللّٰهُ

जिन के नीचे नहरें बहें जिन में हमेशा हमेशा रहें बेशक **अल्लाह** ने उस के लिये अच्छी रोज़ी रखी[34] **अल्लाह** है

الَّذِيْ خَلَقَ سَبْعَ سَمٰوٰتٍ وَّمِنَ الْاَرْضِ مِثْلَهُنَّ ؕ يَتَنَزَّلُ الْاَمْرُ

जिस ने सात आस्मान बनाए[35] और उन्ही के बराबर ज़मीनें[36] हुक्म इन के दरमियान उतरता

بَيْنَهُنَّ لِتَعْلَمُوْۤا اَنَّ اللّٰهَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ۙ۬ وَّاَنَّ اللّٰهَ قَدْ اَحَاطَ

है[37] ताकि तुम जान लो कि **अल्लाह** सब कुछ कर सकता है और **अल्लाह** का इ़ल्म

ع ٢ ١٨ ٥

بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١٢﴾ ع

हर चीज़ को मुह़ीत़ है

اٰياتها ١٢ — ٦٦ سُوْرَةُ التَّحْرِيْمِ مَدَنِيَّةٌ ١٠٧ — رکوعاتها ٢

सूरए तह़रीम मदनिय्या है, इस में बारह आयतें और दो रुकूअ़ हैं

بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो निहायत मेहरबान रह़म वाला[1]

यक़ीनी है इस लिये सीग़ए माज़ी से इस की ता'बीर फ़रमाई गई। **30 :** अ़ज़ाबे जहन्नम की या दुन्या में क़ह़त़ व क़त्ल वग़ैरा बलाओं में मुब्तला कर के **31 :** या'नी वोह इ़ज़्ज़त रसूले करीम मुह़म्मद मुस्त़फ़ा صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم हैं **32 :** कुफ़्र व जहल की **33 :** ईमान व इ़ल्म के **34 :** जन्नत जिस की ने'मतें हमेशा बाक़ी रहेंगी कभी मुन्क़त़अ़ न होंगी। **35 :** एक के ऊपर एक हर एक की मोटाई पांच सो बरस की राह और हर एक का दूसरे से फ़ासिला पांच सो बरस की राह। **36 :** या'नी सात ही ज़मीनें। **37 :** या'नी **अल्लाह** तआ़ला का हुक्म इन सब में जारी व नाफ़िज़

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ لِمَ تُحَرِّمُ مَاۤ اَحَلَّ اللّٰهُ لَكَ ۚ تَبْتَغِيْ مَرْضَاتَ اَزْوَاجِكَ ؕ

ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी) तुम अपने ऊपर क्यूं ह़राम किये लेते हो वोह चीज़ जो अल्लाह ने तुम्हारे लिये ह़लाल की[2] अपनी बीबियों की मरज़ी चाहते हो

وَاللّٰهُ غَفُوْرٌ رَّحِيْمٌ ﴿۱﴾ قَدْ فَرَضَ اللّٰهُ لَكُمْ تَحِلَّةَ اَيْمَانِكُمْ ۚ وَاللّٰهُ

और अल्लाह बख़्शने वाला मेहरबान है बेशक अल्लाह ने तुम्हारे लिये तुम्हारी क़समों का उतार मुक़र्रर फ़रमा दिया[3] और अल्लाह

مَوْلٰىكُمْ ۚ وَهُوَ الْعَلِيْمُ الْحَكِيْمُ ﴿۲﴾ وَاِذْ اَسَرَّ النَّبِيُّ اِلٰى بَعْضِ

तुम्हारा मौला है और अल्लाह इ़ल्मो ह़िक्मत वाला है और जब नबी ने अपनी एक बीबी[4] से

اَزْوَاجِهٖ حَدِيْثًا ۚ فَلَمَّا نَبَّاَتْ بِهٖ وَاَظْهَرَهُ اللّٰهُ عَلَيْهِ عَرَّفَ بَعْضَهٗ

एक राज़ की बात फ़रमाई[5] फिर जब वोह[6] उस का ज़िक्र कर बैठी और अल्लाह ने उसे नबी पर ज़ाहिर कर दिया तो नबी ने उसे कुछ जताया

وَاَعْرَضَ عَنْۢ بَعْضٍ ۚ فَلَمَّا نَبَّاَهَا بِهٖ قَالَتْ مَنْ اَنْۢبَاَكَ هٰذَا ؕ قَالَ

और कुछ से चश्म पोशी फ़रमाई[7] फिर जब नबी ने उसे इस की ख़बर दी बोली[8] हुज़ूर को किस ने बताया फ़रमाया

है या येह मा'ना हैं कि जिब्रीले अमीन आस्मान से वह़्य ले कर ज़मीन की त़रफ़ उतरते हैं। **1 :** सूरए तह़रीम मदनिय्या है, इस में दो 2 रुकूअ़, बारह 12 आयतें, दो सो सेंतालीस 247 कलिमे, एक हज़ार साठ 1060 ह़र्फ़ हैं। **2 शाने नुज़ूल :** सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ह़ज़रत उम्मुल मुअमिनीन ह़फ़्सा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا के मह़ल में रौनक़ अफ़रोज़ हुए, वोह हुज़ूर की इजाज़त से अपने वालिद ह़ज़रते उ़मर رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه की इ़यादत के लिये तशरीफ़ ले गईं, हुज़ूर ने ह़ज़रते मारिया क़िब्त़िया को सरफ़राज़े ख़िदमत किया, येह ह़ज़रते ह़फ़्सा पर गिरां गुज़रा, हुज़ूर ने उन की दिलजूई के लिये फ़रमाया कि मैं ने मारिया को अपने ऊपर ह़राम किया और मैं तुम्हें ख़ुश ख़बरी देता हूं कि मेरे बा'द उमूरे उम्मत के मालिक अबू बक्र व उ़मर होंगे (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) वोह इस से ख़ुश हो गईं और निहायत ख़ुशी में उन्हों ने येह तमाम गुफ़्त्गू ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا को सुनाई, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई और इर्शाद फ़रमाया गया कि जो चीज़ अल्लाह तआ़ला ने आप के लिये ह़लाल की या'नी मारिया क़िब्त़िया आप उन्हें अपने लिये क्यूं ह़राम किये लेते हैं अपनी बीबियों ह़फ़्सा व आ़इशा (رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا) की रिज़ाजूई के लिये और एक क़ौल इस आयत की शाने नुज़ूल में येह भी है कि उम्मुल मुअमिनीन ज़ैनब बिन्ते जह़्श के यहां जब हुज़ूर तशरीफ़ ले जाते तो वोह शह्द पेश करतीं इस ज़रीए़ से उन के यहां कुछ ज़ियादा देर तशरीफ़ फ़रमा रहते, येह बात ह़ज़रते आ़इशा व ह़फ़्सा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا वग़ैरहुमा को ना गवार गुज़री और उन्हें रश्क हुवा, उन्हों ने बाहम मश्वरा किया कि जब हुज़ूर तशरीफ़ फ़रमा हों तो अ़र्ज़ किया जाए कि दहने मुबारक से मग़ाफ़ीर (एक क़िस्म के मशरूब) की बू आती है और मग़ाफ़ीर की बू हुज़ूर को ना पसन्द थी, चुनान्चे ऐसा किया गया, हुज़ूर को उन का मन्शा मा'लूम था, फ़रमाया : मग़ाफ़ीर तो मेरे क़रीब नहीं आया ज़ैनब के यहां शह्द मैं ने पिया है उस को मैं अपने ऊपर ह़राम करता हूं, मक़्सूद येह कि ह़ज़रते ज़ैनब के यहां शह्द का शुग़्ल होने से तुम्हारी दिल शिकनी होती है तो हम शह्द ही तर्क फ़रमाए देते हैं, इस पर येह आयते करीमा नाज़िल हुई। **3 :** या'नी कफ़्फ़ारा तो मारिया को ख़िदमत से सरफ़राज़ फ़रमाइये या शह्द नोश फ़रमाइये या क़सम के उतार से येह मुराद है कि क़सम के बा'द اِنْ شَآءَ اللّٰه कहा जाए ताकि उस के ख़िलाफ़ करने से ह़िन्स न हो (या'नी क़सम न टूटे)। मुक़ातिल से मरवी है कि सय्यिदे आ़लम صَلَّى اللّٰهُ تَعَالٰى عَلَيْهِ وَسَلَّم ने ह़ज़रते मारिया की तह़रीम के कफ़्फ़ारे में एक ग़ुलाम आज़ाद किया और ह़सन رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْه से मरवी है कि हुज़ूर ने कफ़्फ़ारा नहीं दिया क्यूं कि आप मग़फ़ूर हैं कफ़्फ़ारे का हुक्म ता'लीमे उम्मत के लिये है। **मस्अला :** इस आयत से साबित हुवा कि ह़लाल को अपने ऊपर ह़राम कर लेना यमीन या'नी क़सम है। **4 :** या'नी ह़ज़रते ह़फ़्सा **5 :** मारिया को अपने ऊपर ह़राम कर लेने की और उस के साथ येह फ़रमाया कि इस का किसी पर इज़्हार न करना। **6 :** या'नी ह़ज़रते ह़फ़्सा ह़ज़रते आ़इशा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهُمَا से **7 :** या'नी तह़रीमे मारिया और ख़िलाफ़ते शैख़ैन के मुतअ़ल्लिक़ जो दो बातें फ़रमाई थीं उन में से एक बात का ज़िक्र फ़रमाया कि तुम ने येह बात ज़ाहिर कर दी और दूसरी बात को ज़िक्र न फ़रमाया, येह शाने करीमी थी कि गिरिफ़्त फ़रमाने में बा'ज़ से चश्म पोशी फ़रमाई। **8 :** ह़ज़रते ह़फ़्सा رَضِىَ اللّٰهُ تَعَالٰى عَنْهَا ।

www.dawateislami.net

نَبَّاَنِیَ الْعَلِیْمُ الْخَبِیْرُ ﴿۳﴾ اِنْ تَتُوْبَاۤ اِلَى اللّٰهِ فَقَدْ صَغَتْ قُلُوْبُكُمَا ۚ

मुझे इल्म वाले ख़बरदार ने बताया[9] नबी की दोनों बीबियो ! अगर **अल्लाह** की त़रफ़ तुम रुजूअ़ करो तो[10] ज़रूर तुम्हारे दिल राह से कुछ हट गए हैं[11]

وَ اِنْ تَظٰهَرَا عَلَیْهِ فَاِنَّ اللّٰهَ هُوَ مَوْلٰىهُ وَ جِبْرِیْلُ وَ صَالِحُ الْمُؤْمِنِیْنَ ۚ

और अगर उन पर ज़ोर बांधो[12] तो बेशक **अल्लाह** उन का मददगार है और जिब्रील और नेक ईमान वाले

وَ الْمَلٰٓىٕكَةُ بَعْدَ ذٰلِكَ ظَهِیْرٌ ﴿۴﴾ عَسٰى رَبُّهٗۤ اِنْ طَلَّقَكُنَّ اَنْ یُّبْدِلَهٗۤ

और इस के बा'द फ़िरिश्ते मदद पर हैं उन का रब क़रीब है अगर वोह तुम्हें त़लाक़ दे दें कि उन्हें तुम से

اَزْوَاجًا خَیْرًا مِّنْكُنَّ مُسْلِمٰتٍ مُّؤْمِنٰتٍ قٰنِتٰتٍ تٰٓىٕبٰتٍ عٰبِدٰتٍ سٰٓىٕحٰتٍ

बेहतर बीबियां बदल दे इत़ाअ़त वालियां ईमान वालियां अदब वालियां[13] तौबा वालियां बन्दगी वालियां[14] रोज़ादारें

ثَیِّبٰتٍ وَّ اَبْكَارًا ﴿۵﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا قُوْۤا اَنْفُسَكُمْ وَ اَهْلِیْكُمْ

बियाहियां और कुंवारियां[15] ऐ ईमान वालो अपनी जानों और अपने घर वालों को

نَارًا وَّ قُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ عَلَیْهَا مَلٰٓىٕكَةٌ غِلَاظٌ شِدَادٌ لَّا

उस आग से बचाओ[16] जिस के ईंधन आदमी[17] और पथ्थर हैं[18] इस पर सख़्त करें फ़िरिश्ते मुक़र्रर हैं[19] जो

یَعْصُوْنَ اللّٰهَ مَاۤ اَمَرَهُمْ وَ یَفْعَلُوْنَ مَا یُؤْمَرُوْنَ ﴿۶﴾ یٰۤاَیُّهَا الَّذِیْنَ

अल्लाह का हुक्म नहीं टालते और जो उन्हें हुक्म हो वोही करते हैं[20] ऐ काफ़िरो !

ع كَفَرُوْا لَا تَعْتَذِرُوا الْیَوْمَ ؕ اِنَّمَا تُجْزَوْنَ مَا كُنْتُمْ تَعْمَلُوْنَ ﴿۷﴾ ع

आज बहाने न बनाओ[21] तुम्हें वोही बदला मिलेगा जो करते थे

9 : जिस से कुछ भी छुपा नहीं। इस के बा'द **अल्लाह** तआ़ला ह़ज़रते आ़इशा व ह़फ़्सा رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہُمَا को ख़िताब फ़रमाता है : 10 : येह तुम पर वाजिब है। 11 : कि तुम्हें वोह बात पसन्द आई जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को गिरां है या'नी तह़रीमे मारिया। 12 : और बाहम मिल कर ऐसा त़रीक़ा इख़्तियार करो जो सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को ना गवार हो 13 : जो **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم की फ़रमां बरदार और उन की रिज़ा जू हों। 14 : या'नी कसीरुल इबादत 15 : येह तख़्वीफ़ है अज़्वाजे मुत़ह्हरात को कि अगर उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को आज़ुर्दा किया और हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم ने उन्हें त़लाक़ दी तो हुज़ूरे अन्वर صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم को **अल्लाह** तआ़ला अपने लुत़्फ़ो करम से और बेहतर बीबियां अ़त़ा फ़रमाएगा, इस तख़्वीफ़ से अज़्वाजे मुत़ह्हरात मुतअस्सिर हुईं और उन्हों ने सय्यिदे आ़लम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم के शरफ़े ख़िदमत को हर ने'मत से ज़ियादा समझा और हुज़ूर की दिलजूई और रिज़ा त़लबी मुक़द्दम जानी, लिहाज़ा आप ने उन्हें त़लाक़ न दी। 16 : **अल्लाह** तआ़ला और उस के रसूल की फ़रमां बरदारी इख़्तियार कर के इबादतें बजा ला कर गुनाहों से बाज़ रह कर और घर वालों को नेकी की हिदायत और बदी से मुमानअ़त कर के और उन्हें इल्मो अदब सिखा कर। 17 : या'नी काफ़िर 18 : या'नी बुत वग़ैरा, मुराद येह है कि जहन्नम की आग बहुत ही शदीदुल ह़रारत है और जिस त़रह़ दुन्या की आग लकड़ी वग़ैरा से जलती है जहन्नम की आग उन चीज़ों से जलती है जिन का ज़िक्र किया गया। 19 : जो निहायत क़वी और ज़ोर आवर हैं और उन की त़बीअ़तों में रह़्म नहीं। 20 : काफ़िरों से वक़्ते दुख़ूले दोज़ख़ कहा जाएगा जब कि वोह आतशे दोज़ख़ की शिद्दत और उस का अ़ज़ाब देखेंगे : 21 : क्यूं कि अब तुम्हारे लिये कोई जाए उ़ज़्र बाक़ी नहीं रही न आज कोई उ़ज़्र क़बूल किया जाए।

www.dawateislami.net

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا تُوْبُوْۤا اِلَى اللّٰهِ تَوْبَةً نَّصُوْحًا ؕ عَسٰى رَبُّكُمْ اَنْ

ऐ ईमान वालो ! अल्लाह की त़रफ़ ऐसी तौबा करो जो आगे को नसीह़त हो जाए[22] क़रीब है कि तुम्हारा रब[23]

يُّكَفِّرَ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يُدْخِلَكُمْ جَنّٰتٍ تَجْرِيْ مِنْ تَحْتِهَا الْاَنْهٰرُ ۙ

तुम्हारी बुराइयां तुम से उतार दे और तुम्हें बाग़ों में ले जाए जिन के नीचे नहरें बहें

يَوْمَ لَا يُخْزِي اللّٰهُ النَّبِيَّ وَ الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا مَعَهٗ ۚ نُوْرُهُمْ يَسْعٰى بَيْنَ

जिस दिन अल्लाह रुस्वा न करेगा नबी और उन के साथ के ईमान वालों को[24] उन का नूर दौड़ता होगा

اَيْدِيْهِمْ وَ بِاَيْمَانِهِمْ يَقُوْلُوْنَ رَبَّنَاۤ اَتْمِمْ لَنَا نُوْرَنَا وَ اغْفِرْ لَنَا ۚ

उन के आगे और उन के दहने[25] अ़र्ज़ करेंगे ऐ हमारे रब हमारे लिये हमारा नूर पूरा कर दे[26] और हमें बख़्श दे

اِنَّكَ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ قَدِيْرٌ ﴿۸﴾ يٰۤاَيُّهَا النَّبِيُّ جَاهِدِ الْكُفَّارَ وَ الْمُنٰفِقِيْنَ

बेशक तुझे हर चीज़ पर क़ुदरत है ऐ ग़ैब बताने वाले (नबी)[27] काफ़िरों पर और मुनाफ़िक़ों पर[28] जिहाद करो

وَ اغْلُظْ عَلَيْهِمْ ؕ وَ مَاْوٰىهُمْ جَهَنَّمُ ؕ وَ بِئْسَ الْمَصِيْرُ ﴿۹﴾ ضَرَبَ اللّٰهُ

और उन पर सख़्ती फ़रमाओ और उन का ठिकाना जहन्नम है और क्या ही बुरा अन्जाम अल्लाह काफ़िरों की

مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ كَفَرُوا امْرَاَتَ نُوْحٍ وَّ امْرَاَتَ لُوْطٍ ؕ كَانَتَا تَحْتَ

मिसाल देता है[29] नूह़ की औ़रत और लूत़ की औ़रत वोह हमारे बन्दों में

عَبْدَيْنِ مِنْ عِبَادِنَا صَالِحَيْنِ فَخَانَتٰهُمَا فَلَمْ يُغْنِيَا عَنْهُمَا مِنَ اللّٰهِ

दो सज़ावारे क़ुर्ब (मुक़र्रब) बन्दों के निकाह में थीं फिर उन्हों ने उन से दग़ा की[30] तो वोह अल्लाह के सामने उन्हें कुछ काम

22 : या'नी तौबए सादिक़ा जिस का असर तौबा करने वाले के आ'माल में ज़ाहिर हो और उस की ज़िन्दगी त़ाअ़तों और इ़बादतों से मा'मूर हो जाए और वोह गुनाहों से मुज्तनिब रहे, ह़ज़रते उ़मर رَضِیَ اللّٰہُ تَعَالٰی عَنْہ ने और दूसरे अस्ह़ाब ने फ़रमाया तौबए नसूह़ वोह है कि तौबा के बा'द आदमी फिर गुनाह की त़रफ़ न लौटे जैसा कि निकला हुवा दूध फिर थन में वापस नहीं होता। 23 : तौबा क़बूल फ़रमाने के बा'द 24 : इस में कुफ़्फ़ार पर ता'रीज़ है कि वोह दिन उन की रुस्वाई का होगा और नबिय्ये करीम صَلَّی اللّٰہُ تَعَالٰی عَلَیْہِ وَسَلَّم और हुज़ूर के साथ वालों की इ़ज़्ज़त का। 25 : सिरात़ पर और जब मोमिन देखेंगे कि मुनाफ़िक़ों का नूर बुझ गया 26 : या'नी इस को बाक़ी रख कि दुख़ूले जन्नत तक बाक़ी रहे 27 : तलवार से 28 : क़ौले ग़लीज़ और वा'ज़े बलीग़ और हुज्जते क़वी से 29 : इस बात में कि उन्हें उन के कुफ़्र और मोमिनीन की अ़दावत पर अ़ज़ाब किया जाएगा और इस कुफ़्रो अ़दावत के होते हुए उन का नसब और मोमिनीन और मुक़र्रबीन के साथ उन की क़राबत व रिश्तेदारी उन्हें कुछ नफ़्अ़ न देगी। 30 : दीन में कि कुफ़्र इख़्तियार किया, ह़ज़रते नूह़ की औ़रत वाहिला अपनी क़ौम से ह़ज़रते नूह़ عَلَیْہِ السَّلَام की निस्बत कहती थी कि वोह मज्नून हैं और ह़ज़रते लूत़ عَلَیْہِ السَّلَام की औ़रत वाइला अपना निफ़ाक़ छुपाती थी और जो मेहमान आप के यहां आते थे आग जला कर अपनी क़ौम को उन के आने से ख़बरदार करती थी।

www.dawateislami.net

شَيْـًٔا وَّ قِيْلَ ادْخُلَا النَّارَ مَعَ الدّٰخِلِيْنَ ﴿۱۰﴾ وَ ضَرَبَ اللّٰهُ مَثَلًا لِّلَّذِيْنَ

न आए और फ़रमा दिया गया[31] कि तुम दोनों औ़रतें जहन्नम में जाओ जाने वालों के साथ[32] और अल्लाह मुसल्मानों की मिसाल

وقف لازم

اٰمَنُوا امْرَاَتَ فِرْعَوْنَ ۘ اِذْ قَالَتْ رَبِّ ابْنِ لِيْ عِنْدَكَ بَيْتًا فِي الْجَنَّةِ

बयान फ़रमाता है[33] फ़िरऔ़न की बीबी[34] जब उस ने अ़र्ज़ की ऐ मेरे रब मेरे लिये अपने पास जन्नत में घर बना[35]

وَ نَجِّنِيْ مِنْ فِرْعَوْنَ وَ عَمَلِهٖ وَ نَجِّنِيْ مِنَ الْقَوْمِ الظّٰلِمِيْنَ ﴿۱۱﴾ لا وَ

और मुझे फ़िरऔ़न और इस के काम से नजात दे[36] और मुझे ज़ालिम लोगों से नजात बख़्श[37] और

مَرْيَمَ ابْنَتَ عِمْرٰنَ الَّتِيْۤ اَحْصَنَتْ فَرْجَهَا فَنَفَخْنَا فِيْهِ مِنْ رُّوْحِنَا

इमरान की बेटी मरयम जिस ने अपनी पारसाई की हि़फ़ाज़त की तो हम ने उस में अपनी त़रफ़ की रूह़ फूंकी

۲ ع ٥٠

وَ صَدَّقَتْ بِكَلِمٰتِ رَبِّهَا وَ كُتُبِهٖ وَ كَانَتْ مِنَ الْقٰنِتِيْنَ ﴿۱۲﴾ ع

और उस ने अपने रब की बातों[38] और उस की किताबों[39] की तस्दीक़ की और फ़रमां बरदारों में हुई

31 : उन से वक़्ते मौत या रोज़े क़ियामत (और ता'बीरे सीग़ए माज़ी से) ब लिहाज़ तह़क़्क़ुक़े वुक़ूअ़ के है। **32 :** या'नी अपनी क़ौमों के कुफ़्फ़ार के साथ क्यूं कि तुम्हारे और उन अम्बिया के दरमियान तुम्हारे कुफ़्र के बाइस अ़लाक़ा बाक़ी न रहा। **33 :** कि इन्हें दूसरे की मा'सियत ज़रर नहीं देती। **34 :** जिन का नाम आसिया बिन्ते मुज़ाहि़म है, जब ह़ज़रते मूसा عَلَيْهِ السَّلَام ने जादूगरों को मग़्लूब किया तो येह आसिया आप पर ईमान ले आईं, फ़िरऔ़न को ख़बर हुई तो इस ने उन पर सख़्त अ़ज़ाब किये उन्हें चौमेख़ा किया (या'नी उन के हाथ पाउं में कीलें ठोक दीं) और भारी चक्की सीने पर रखी और धूप में डाल दिया, जब फ़िरऔ़नी उन के पास से हटते तो फ़िरिश्ते उन पर साया करते। **35 :** अल्लाह तआ़ला ने उन का मकान जो जन्नत में है उन पर ज़ाहिर फ़रमाया और इस की मसर्रत में फ़िरऔ़न की सख़्तियों की शिद्दत उन पर सह्ल हो गई। **36 :** फ़िरऔ़न के काम से या उस का शिर्क व कुफ़्र व ज़ुल्म मुराद है या उस का क़ुर्ब। **37 :** या'नी फ़िरऔ़न के दीन वालों से, चुनान्चे येह दुआ़ उन की क़बूल हुई और अल्लाह तआ़ला ने उन की रूह़ क़ब्ज़ फ़रमाई और इब्ने कैसान ने कहा कि वोह ज़िन्दा उठा कर जन्नत में दाख़िल की गईं। **38 :** रब की बातों से शराएअ़ व अह़काम मुराद हैं जो अल्लाह तआ़ला ने अपने बन्दों के लिये मुक़र्रर फ़रमाए। **39 :** किताबों से वोह किताबें मुराद हैं जो अम्बिया عَلَيْهِمُ السَّلَام पर नाज़िल हुई थीं।

www.dawateislami.net